जापान

हिन्दी

शान्ति - मुक्ति अंक

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

রঞ্জন গুপ্ত (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

208, मैंशन न्यू ताकानावा

2-10-15 ताकानावा , मिनातो कू

तोक्यो 108

फोन/ई-मेल

सौरभ : 03-3462-0853

singals@ml.com

रंजन कुमार : 03-3473-6043

ranjan@twics.com

फैक्स

सुशील : 03-3832-1641

अंक ६ विक्रम संवत् २०५२ अगस्त१९९५

इस अंक में

हमारा पत्रा ...२

आपका पत्रा ...३

हे ईश्वर ...५

ये क्या जगह है ...७

युवा पीढ़ी का आश्चर्यजनक असमंजस ...८

नोबेल व सँस्कृति पुरस्कार ...९

व्दितीय विश्व युध्द और भारत की आज़ादी ...१६

स्वाधीनता के स्वर ...१७

स्वाधीनता का सिपाही ...१९

निवेदन ...२०

स्वदेशीगान ও আমি ... २०

स्वाधीनता ...२१

ারমাণবিক বোমা ও জাপান ...२२

নেতাজী ও জাপান ...२२

हमारा पन्ना

अगस्त का यह महीना सदियों से भारतीय संस्कृति में सावन-भादों, तीज त्योहारों के लिए और जापान में पितृों के स्मृति-पर्व के लिए जाना जाता है। किन्तु आधुनिक इतिहास की कुछ युगान्तकारी घटनाएं भी इसी के नाम लिखी हुई हैं। ९ अगस्त, १९४२ को अंग्रेजों भारत छोड़ो का शंखनाद हुआ, १४ अगस्त, १९४५ को भारत विधिवत दो टुकड़ों में बांटा गया और १५ अगस्त, १९४७ को आज का भारत २०० बरस की दासता से मुक्त हुआ। जापान में ६ अगस्त, १९४५ को हिरोशिमा पर विश्व का प्रथम परमाणु बम गिराया गया और ९ अगस्त, १९४५ को नागासाकी पर उसकी पुनरावृत्ति हुई। १५ अगस्त, १९४५ को दूसरे महायुद्ध की दावाग्नि शांत हुई।

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति और जापान पर परमाणु बम वर्षा को आधी सदी बीत गई पर न युद्धों से मुक्ति मिली न परमाणु शस्त्रों के आतंक से। विश्व में शांति का सपना आज भी गोष्ठियों और दस्तावेजों की काल कोठरी में बंद है। भूख, गरीबी और असमानता का शिकंजा कुछ और फैला है। जोड़ने के नाम पर तोड़ने का अथक परिश्रम निरन्तर जारी है। कभी-कभी तो जापान के उस आत्मघाती कामिकाजे पायलट की बात ही सही लगने लगती है, जिसने आत्मघाती उड़ान से पहले लिखा था कि शांति तो शायद तभी आएगी जब धरा से मानव नाम का प्राणी मिट जाएगा। पर शायद निराश होकर बैठ जाना मानव धर्म नहीं है।

शेष विश्व की तरह भारत भी अपनी स्वाधीनता के ४९ वें वर्ष में इन्हीं उलझनों से जूझ रहा है।

इन तमाम सन्दर्भों में जापान भारती के इस अंक का नामकरण हमने किया है- शांति-मुक्ति अंक। इसमें परमाणु बम त्रासदी के कुछ पहलुओं पर चर्चा के साथ-साथ जापान में आज की युवा पीढ़ी की मनःस्थिति का आकलन किया गया है। भारत के स्वाधीनता आंदोलन के दौरान और उसके आसपास रची गई कुछ कविताओं और गीतों पर आधारित रचना शायद आपको रोचक लगेगी। इस बार बांग्ला भाषा की सामग्री के संकलन और प्रकाशन में श्री विवेक दासगुप्त का सहयोग अनमोल रहा। रक्षाबंधन और श्रीकृष्णजन्माष्टमी मंगलमय हो।

यह अंक समर्पित है उन तमाम दिवंगत आत्माओं को जो भारत, जापान या दुनिया के किसी भी हिस्से में, कहीं भी, कभी भी इंसान पर हुकुमत करने और इंसान को गुलाम बनाने की इंसानी हवस की बलि चढ़ी हैं।

-सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ जी,

मैं अभी कुछ दिनों पहले ही जापान आई हूँ ,भारत से । सौभाग्यवश आते ही मुझे *जापान-भारती* का अंक ४ मिला, जिससे भावनात्मक रुप से मुझे अतीव बल व प्रेरणा मिली । अपनी मिट्टी से बहुत दूर होते हुए भी, अपनी मिट्टी की सुगन्ध को पास ही पाया । अत्यन्त आभारी हूँ - जापान भारती व सम्पादक मण्डली की । कृपया मुझे इसके प्रत्येक अंक नियमित रुपेण भेजने का कष्ट करें ।

मैं हिन्दी साहित्य में रुचि रखती हूँ एवं बंगला साहित्य भी मुझे इतना ही प्रिय है । क्या मैं अपनी रचना इस पत्रिका के लिए भेज सकती हूँ ?

शुभकामनाओं सहित

सुरभि , तोक्यो

जब से मैंने तुम्हारी पत्रिका *जापान-भारती* पढ़ी, तभी से मैं तुम्हे पत्र लिखने का सोच रही थी । सबसे पहले तो तुम हमारी हार्दिक बधाई व शुभकामनायें स्वीकार करो । तुमने अपनी इतनी व्यस्तता में भी समय निकाल कर जो यह पत्रिका निकाली है, यह सचमुच ही प्रशंसनीय, उत्साहवर्धक और सराहनीय है । जापान में रहकर भी अपनी मातृभाषा हिन्दी को नहीं भूले, तुम्हारा यह प्रयास भारत और जापान मैत्री और उसकी संस्कृति के प्रति सम्मान दर्शाता है ।

'जापान-भारती' नाम मुझे बहुत पसन्द आया, क्योंकि यह नामकरण दोनो देशों की मित्रता का द्योतक है ।

पत्रिका में व्रत-त्योहारों की रुची देखकर बहुत प्रसन्नता हुई । यह जापान में रहनेवाले भारतीयों के मन में अपने व्रत-त्योहारों को जीवित रखने का सुन्दर प्रयास है । तुम्हारी इस पत्रिका का भविष्य उज्वल है और यह दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

ज्योति गोविल, मेरठ

जापान भारती पत्रिका का पिछला अंक पढ़ा, पढ़ कर बहुत खुशी हुई । जापान भारती को जापान में प्रकाशित कर के आपने बहुत अच्छा काम किया है । इसके लिए आपको तथा आपके सहयोगियों को बहुत-बहुत बधाई हो ।

पिछले अंक में आपने स्कंद पुराण के श्लोक प्रकाशित किए, पढ़ कर बहुत अच्छा लगा । मुझे आशा है कि आप इसी तरह और ज्ञान की बातें प्रकाशित करते रहेंगे ।

अशोक रावत का पत्र भी पढ़ा जिसमें उन्होंने जापान में रहने वाले इंसान की ज़िंदगी के बारे दो शब्दों में ही सब कुछ कह दिया है । मैं अगर जापान भारती के लिए कभी कुछ कर पाया तो अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझूंगा ।

रवि जैन, कावासाकी

जापान भारती का अंक मेरे हाथ में है । पा कर सुखद आश्चर्य हुआ । आपको व आपके सहयोगियों को बधाई व शुभकामनाएं । विदेशों में भारतीय संस्कृति की पहचान बनाए रखने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है ।

यह पत्रिका विभिन्न भारतीय और अन्य देशों के विद्वानों के सहयोग से अवश्य ही अधिक सशक्त और प्रभावशाली बन पाएगी । विभिन्न स्तम्भों को मैंने रोचक, शिक्षाप्रद एवं व्यापक सूचना-सूत्र के रूप में पाया । शुभकामना है कि यह प्रवृत्ति अधिकाधिक विकसित हो ।

आशा है कि आगामी अंकों में कुछ और स्तंभ देखने को मिलेंगे, जैसे आध्यात्म, अमृतवाणी, बुद्धि-परीक्षा, सामान्य-ज्ञान प्रश्नोत्तर आदि । शुभकामनाएं,

डॉ. कुन्तल, मेरठ,

जापान भारती के तृतीय एंव चतुर्थ अंक हस्तगत हुए। हार्दिक धन्यवाद व बधाई। जापान से 'जापान भारती' का प्रकाशन आपका सराहनीय व ***'सुशील'*** प्रयास है।

ऐसा लगता है कि भारतीय सांस्कृतिक व कलात्मक धरोहा के *'सौरभ'* से ***'अखिल'*** विश्व सुवासित है। स्वस्थ मनो***'रंजन'*** से भरपूर 'जापान भारती' जापान व भारत को एक सांस्कृतिक मंच पर लाने का सफल एंव सशक्त माध्यम है।

शुभ कामनाओं सहित,

डा. वी. डी. वार्ष्णेय,विश्वलेखा विला

विष्णु पुरी,अलीगढ़